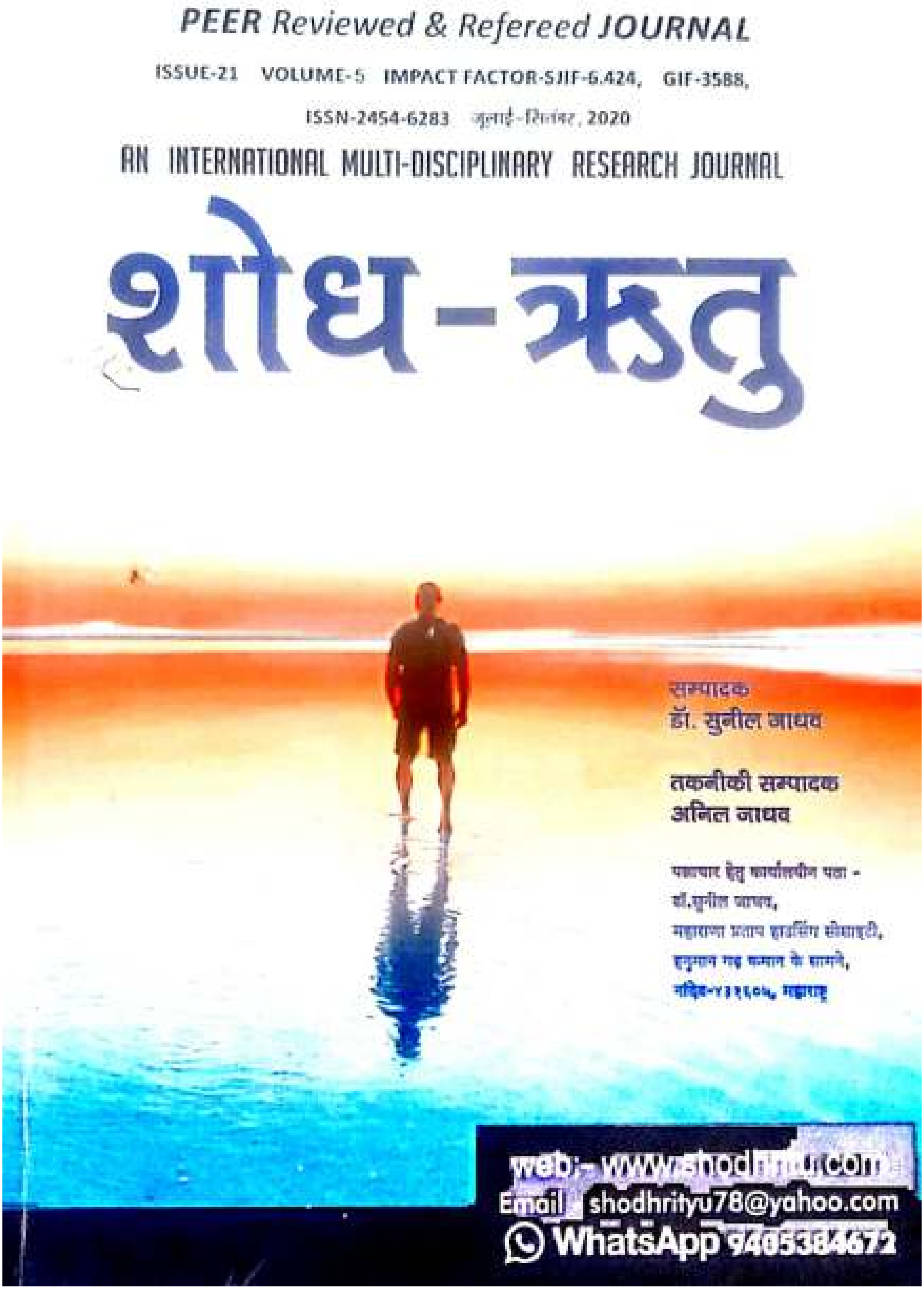
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL
ISSUE-21 VOLUME-5 IMPACT FACTOR-SJIF-6.424, GIF-3588,
ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर, 2020
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
शोध-ऋतु
सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव
तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव
Email shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड-महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

"शोध-ऋतु ' तिमाही पत्रिका मे आलेख लेखक निम्न बिन्दुओ पर अवश्य ध्यान दे |
फॉण्ट-कृति देव १० वर्ड फाइल मे ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी |
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी |
आलेख विषयतज्ञो द्वारा चयन किये जायेंगे |
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी |
चयनित आलेख के लिए १०००रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा |
लेखक मौलिक शोध परख एवं वैचारिक आलेख ही भेजे |
व्हाट्स एप-९४०५३८४६७२

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

ISSUE-21 VOL-5 IMPACT- SJIF-6.424, GIF-2.3588 ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर,2020

1. सिद्धांतशास्त्र और अन्य सम्प्रदायों के बीच संबंधों पर एक संक्षिप्त अध्ययन–दू र्ई–05
2. केदारनाथ अग्रवाल का पत्नी–प्रेम–डॉ.देवी कुमारी–08
3. रीतिकालीन कवि भिखारी दास तथा केशव की अलंकार दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. अर्चना सक्सेना–11
4. मनु शर्मा के पौराणिक उपन्यासों की भाषा शैली–डॉ धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा–13
5. सत्यतापरकता की पत्रकारिता मिशन या व्यवसाय–डॉ. कुमार मित्र गंगाराम–16
6. दलित आत्मकथाओं में कर्ज एवं सूदखोरी का चित्रण–जय प्रकाश–18
7. जनजीवन और त्रिलोचन का काव्य–डॉ० रमण कुमार झा–21
8. साहित्य , संस्कृति एवं पर्यावरण का अंतर्संबंध–सरस्वती कुमारी–23
9. हर स्त्री सावित्री : प्राचीन से आधुनिक–सुप्रिया कुमारी–27
10. पीड़ितों का जंजाल–राधाकृष्ण का रचना संसार'–सुप्रिया कुमारी–29
11. शब्द के सांस्कृतिक सन्दर्भ (हिन्दी अंग्रेजी भाषान्तरित शब्दों के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ. यतीन्द्र सिंह–31
12. भारत में हिन्दू जीवन का आधार–डॉ० अमित कुमार चंचल–35
13. स्वातंत्र्योत्तर भारत में बिहार में उच्च शिक्षा का विकास–निरंजन कुमार–37
14. अमरकांत की कहानियों में प्रतीक–डॉ० सुलोचना कुमारी–39
15. उर्वशी का काव्य वैशिष्ट्य–साधना कुमारी–42
16. 'ये तुम ही जानो' काव्य संग्रह में दलित नारी–उषा यादव–45
17. मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की मानसिकता–नितू कुमारी–48
18. लीलाधर जगूड़ी के काव्य में यथार्थ चित्रण–प्रेमचन्द रविदास–51
19. अनामिका के काव्य में स्त्री का व्यक्तिगत जीवन–राजेश कुमार खण्डा–53
20. शमशेर के काव्य में बिम्ब–विधान–डॉ. रेखा कुमारी–55
21. 'सितार वाद्य' की घराना परंपरा–एक अध्ययन–डॉ.सारिका पटेल–58
22. लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ–डॉ.शारदा कुमारी–62
23. तुलसीदास के काव्यों में मानव निर्मित पर्यावरण–डॉ.सीता सिन्हा–67
24. चंपारण सत्याग्रह एवं राजकुमार शुक्ल–डॉ.अंगूरी बेगम–68
25. बच्चों में भाषा सम्बंधी विकास : चरण, विशिष्टता एवं कारण–डॉ0 अस्मिता सिंह–72
26. समावेशी विकास: एक परिचय(Inclusive Growth: An Introduction)–दिवाकर यादव–75
27. अद्वैते वादोपयोगिनां न्यायपदार्थानां निरूपणम्–डा. सतीश के. एस.–79
28. आधुनिक भारत में राष्ट्रवादी अवधारणा के विकास में कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं का योगदान:एक अध्ययन–डॉ.राजीव कुमार–83
29. राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं प्रगति : एक अध्ययन–डॉ.सुधीर कुमार–87
30. 'हंस'पत्रिका में आदिवासियों के भाषाई और सांस्कृतिक प्रश्न–डॉ. संजीव कुमार–90
31. सविनय अवज्ञा आंदोलन में सिवनी जिले का अवदान–डॉ. संकेत कुमार चौकसे–92
32. राधिकारमण प्रसाद सिंह के नाटकों में राष्ट्रीयता–डॉ.ज्योति कुमारी–95
33. नाथ संप्रदाय की अपभ्रंश रचनाएँ–सुरेश प्रियदर्शी–98
34. उषा प्रियंवदा के कथा–साहित्य में शिल्पगत यथार्थ–डॉ.जनक नन्दिनी–102
35. "नयी कविता और मुक्त छन्द'–कामायनी कुमारी–104
36. संस्कृति के चार अध्याय–मूल्यांकन एवं विश्लेषण–डॉ. रत्ना कुशवाहा–107

ISSUE-21 VOL-5 IMPACT- SJIF-6.424, GIF-2.3588 ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर,2020

से/मसाला की जर्जर प्रति से उठती/हल्की-सी सुगंध/मां/गर्दन के पीछे से मकोय के फूलों की महक/पेंसिल से अभी-अभी बाहर आयी/गरम फरवरी की भाप/और उसकी गरम-नरम छाती से/जन्मा हुआ बच्चों के रोने का/सीता-सा हरा।' 11 प्रथम स्राव, माँ बनना और उसके बाद रजोनिवृत्ति भी एक शारीरिक प्रक्रिया है। रजोनिवृत्ति के बाद स्त्री जीवन के नये जीवन, नये अध्याय की शुरुआत होती है। अनामिका ने इस सन्दर्भ में लिखा है- 'अन्तिम रजस्राव, छुटकारा, परिवर्तन ऋतु का/पत और क्या !/यात्रा शुरू होती है अनन्त की/'हैट' और 'मेट' से निरन्तर ही।' 12 रचनाकार की रचनाधर्मिता और हर कृति से उसकी संवेदना कुछ ऐसे अनुपम संसार को स्थापित करती है जिसमें रचना, रचनाकार, रचना संसार एवं भावुकता एक साथ अपने पृथक अस्तित्व को त्याग देते है। कुछ ऐसी स्थिति अनामिका के काव्य मे उपस्थित है भारतीय इतिहास में स्त्री की स्थिति अच्छी नहीं रही है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को मात्र एक वस्तु के रूप में देखना पसन्द किया गया है। उसके अंग-प्रत्यंग का मूल्य किया जाता है, लेकिन उसके अन्दर जो सामर्थ्य है, उसका कोई मूल्य नहीं है। उसके व्यक्तिगत जीवन में कितना कोलाहल है यह समझने की आवश्यकता है। अनामिका ने अपने काव्य में स्त्री के व्यक्तिगत जीवन के जो रूप प्रस्तुत किये है। यह रूप केवल एक स्त्री ही प्रस्तुत कर सकती है। क्यों की जो भोगा हुआ होता है। उसका वर्णन बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1-अनामिका का काव्य, मंजु रुस्तगी, वाणी प्रकाशन, सं0 2015, पृ0 197 2-कृपा कुलकर्णी, मराठी व्युत्पत्ति कोष पृ0 804 3-कमल कुमार मुक्ता, स्त्री सशब्द विवेक और विभ्रम, पृ0 64 4-अनामिका का काव्य, मंजु रुस्तगी, वाणी प्रकाशन, सं0 2015, पृ0 198 5-अनामिका, प्रथमस्राव, अनुष्टुप, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 28-29 6-अनामिका, मरने की फुर्सत, दूब धान, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, पृ0 28 7-अनामिका, अन्तःसत्वा, बेजगर, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 29 8-अनामिका, तीसरी दुनिया, एक स्त्री का अन्तर्जगत बनाम बहिर्जगत, कविता में औरत, साहित्य उपक्रम, दिल्ली, पृ0 50 9-अनामिका, अन्तःसत्वा, बेजगर, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 29 10-अनामिका, ईश्वर, बेजगर, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 68 11-अनामिका, गन्ध, बेजगर, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 59 12-अनामिका, जगधात्री मेडिसिन, अनुष्टुप, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 72

19.अनामिका के काव्य मे स्त्री का व्यक्तिगत जीवन

राजेश कुमार खन्ना, शोध छात्र
हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

स्त्री ईश्वर की एक ऐसी अद्भुत रचना है जिसके भीतर दया, ममता, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, संवेदना, करुणा, कोमलता, भावुकता आदि गुण भरे पड़े है। किन्तु पुरुष अपने अत्याचारों और अभद्र व्यवहार से उसी कोमलांगना को कठोर बनने के लिए विवश करता है। स्त्री के अनेक रूप हमारे सामने आये और छुपते होते चले गये। स्त्री माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप मे सदा ही पुरुष के साथ रहती है। स्त्री का कोई भी रूप हमारे सामने आया हो किन्तु पुरुष ने उसे केवल छलने का कार्य ही किया है। कोई भी काल रहा हो स्त्री छल से बच नहीं सकी है। आधुनिक और उत्तर आधुनिक काल में अनेक विमर्श उभर कर सामने आये। इन विमर्शों में प्रमुख रूप से आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, स्त्री चेतना आदि प्रमुख है।

आधुनिक काल की स्त्री लेखिकाओं में अनामिका का एक विशिष्ट स्थान है। अनामिका ने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में सृजन कर अपनी सृजनधर्मिता का बखूबी निर्वहन किया है। स्त्री विमर्श के स्वरूप पर अनामिका ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है कि- "शुरुआती दौर में यह स्त्री पुरुष सम्बंधो, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं तथा समाज के उपेक्षित वर्गों की समस्याओं तक ही सीमित था, मूलतः स्त्री केन्द्रित ही था, लेकिन अब इसकी दृष्टि व्यापक हो गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर जितनी भी घटनाएं घट रही हैं, उन सबकी चिन्ता भी इसके केन्द्र में है। सम्बन्धों में संवेदना का ह्रास और उसके कारण विघटन की जो स्थिति बनी है, इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण है और स्त्री विमर्श उसी का निवारण मनोवैज्ञानिक तरीके से चाहता है। हिंसा का बदला हिंसा से नहीं लिया जा सकता। मनुष्य स्वभाव से इतना क्रूर और हिंसक जो हो गया, बचपन से मन में पड़ी किसी कुंठा का ही परिणाम है।

स्त्री विमर्श मानव के मन मे आशा का संचार करना चाहता है। फिर से मानवीय मूल्यों से संयुक्त करना चाहता है। आशावादिता इसका मूलमन्त्र है।'1 स्त्री शब्द 'स्त्यै' धातु मे ड्रप और ङीप प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है– ठहरना, घेरा बनाना, फैलना। इस प्रकार इसका व्युत्पत्ति परक अर्थ हुआ– स्त्यायेते अस्या गर्भ अति स्त्री "– अर्थात जहाँ पर गर्भ ठहरता है उसे स्त्री कहते है। नारी और महिला आदि इसके पर्यायवाची है।

वैदिक काल से लेकर आज तक नारी के लिए स्त्री शब्द का सबसे अधिक प्रचलित हुआ है। स्त्री वैदिक कालीन संस्कृत शब्द है। ऋग्वेद मे इसका सर्वप्रथम प्रयोग मिलता है। 'स्त्री शब्द की व्युत्पत्ति के अनुसार "स्त्री सूत्री जन्मदात्री" अर्थात वह परिवार की सूत्रधारक होने से स्त्री कहलाती है और जन्म देने वाली होने से स्त्री कहलाती है।'2

कमल कुमार गुप्ता ने स्त्री को परिभाषित करते हुए लिखा है– 'मेरी दृष्टि मे स्त्री पानी है, उसे पिये बिना जीवन नही चलता। उसमें नहाए बिना पवित्रता का एहसास नही होता। बहते पानी के किनारे बैठ राग–विराग और अनुराग का स्पर्श नही होता। बरसते पानी मे भीगे बिना मौसमों का अन्दाज नही मिलता। बाढ के पानी में तैरे बिना कोई किनारा नही मिलता।'3 स्त्री विमर्श मे अनामिका उनकी उपलब्धियों के बारे मे प्रकाश डालते हुए कहती है कि– 'स्त्री विमर्श की सबसे बड़ी उपलब्धि ही यही है कि अपनी खुदी की चेतना जागी है। हर वर्ग, धर्म जाति के लोगों मे एक नयी चेतना जाग्रत हुई है। यहाँ तक की सड़क पर रहने वाली स्त्री भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठी है।'4

नारी के व्यक्तित्व पहचान के लिए विभिन्न आन्दोलन हो रहे हैं। इन समस्त आन्दोलनों का उद्देश्य नारी का अस्तित्व अपनी पहचान, अपनी स्वतन्त्रता, अपनी क्षमता तथा नारी के लिए सुखद भविष्य का निर्माण करना है। आज स्त्री विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत होने के बावजूद भी उसका स्वतन्त्र अस्तित्व सहजतापूर्वक स्वीकार नही किया जाता है। पुरुष प्रधान सत्तात्मक समाज मे अपना सम्मानित स्थान सुरक्षित करने की लालसा ही स्त्री को स्त्री का दुश्मन बना रही है।

स्त्री स्वयं अपना भाव है। स्त्री के लिये योनित्व का दावा महत्वपूर्ण है। स्त्री के प्रथम स्राव पर शायद ही किसी अन्य ने लिखा होगा। अनामिका प्रथम रजोस्राव के अनुभव को इस प्रकार प्रकट करती है– 'कुंडलिनी–सी जगी बैठी/पलंग पर!/उसकी सफेद फ्राक और जाँघिए पर/किसी परी माँ ने काढ़ दिये है/कत्थई गुलाब रात भर मे?/और कहानी के वे सात बौने/क्यों गुत्थमगुत्थी/मचा रहे है/उसके पेट मे?/अनहद–सी बज रही है लड़की/काँपती हुई/लगातार झंकृत है उसकी जंघाओं मे इकतारे/चकोर–सी नाच रही है/वह एक महीयसी मुद्रा मे/गोद मे छुपाये हुए/सृष्टि के प्रथम सूर्य–सा/लाल–लाल तकिया।'5 पूजा स्थलों पर रजोधर्म स्त्रियों का जाना वर्जित होता है। इस पर तीखा प्रहार करते हुए अनामिका ने लिखा है– 'ईसा मसीह/और नही थे/वरना मासिक धर्म/ग्यारह बरस की उमर से/उनको ठिठकाये ही रखता/देवालय के बाहर।'6 अनामिका ने गर्भिणी स्त्री और गर्भाशय मे विकसित होने वाले भ्रूण का अनुभव करते हुए लिखा है– 'मेरे भीतर कुछ चल रहा है/नहीं षडयन्त्र नहीं, तन्त्र नहीं, मन्त्र नहीं/क्या पता क्या?/जैसे घटती है घटना–कुछ चल रहा है–/नहीं बढ़ रहा है जैसे बढ़ती है नदी।'7 परिवार मे स्त्री का दर्जा दोयम हो, घर और बच्चों की देखभाल तक उसकी जिम्मेदारी सीमित हो, उसका अपना कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व न विकसित हो सकता हो, तब वह परिवार मे उपस्थित होकर भी स्वयं को अनुपस्थित समझने लगती है। ऐसी ही अनिश्चितपरक एक कविता और देखे– 'लोग दूर जा रहे हैं/हर कोई किसी से दूर/लोग दूर जा रहे हैं/और घट रहा है/मेरे आस–पास का स्पेस।'8 अनामिका ने स्त्री के व्यक्तिगत जीवन मे घटित होने वाली अनेक घटनाओं का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। प्रजनन के चयन का दाव, देह के दावे को सशक्त ढंग से अनामिका ने अपनी कविता में प्रस्तुत किया है। यथा–'देखो यहाँ बिल्कुल यहाँ–/नाभि के बीचों–बीच/उठते गिरते/हथौड़ों के नीचे/लगातार जैसे कुछ ढल रहा है।'9 प्रसव वेदना को अनामिका प्रस्तुत करते हुए लिखती है–'यह मेरा सातवाँ था/ठीक–ठीक कहिए तो आठवाँ/इसको जानकर थोड़ा घबराई भी थी मैं/खून से लिथड़ा हुआ/यह मेरी जाँघों के बीच पड़ा था,/आँखें/नहीं खुली थीं/नाल नहीं कटी थी।/कुछ था जो नहीं था/और कुछ नहीं था जो था।/ऐंठ रहे थे मेरे पाँव/बार–बार छाती मे/उलझ रही थी डाल्फिन मछली।'10 मातृत्व की गन्ध अनामिका के काव्य मे देखते ही बनती है। 'माँ के नाखूनों से आती थी/बेसन की हल्की सी सुगन्ध/आँखों

CS Scanned with CamScanner

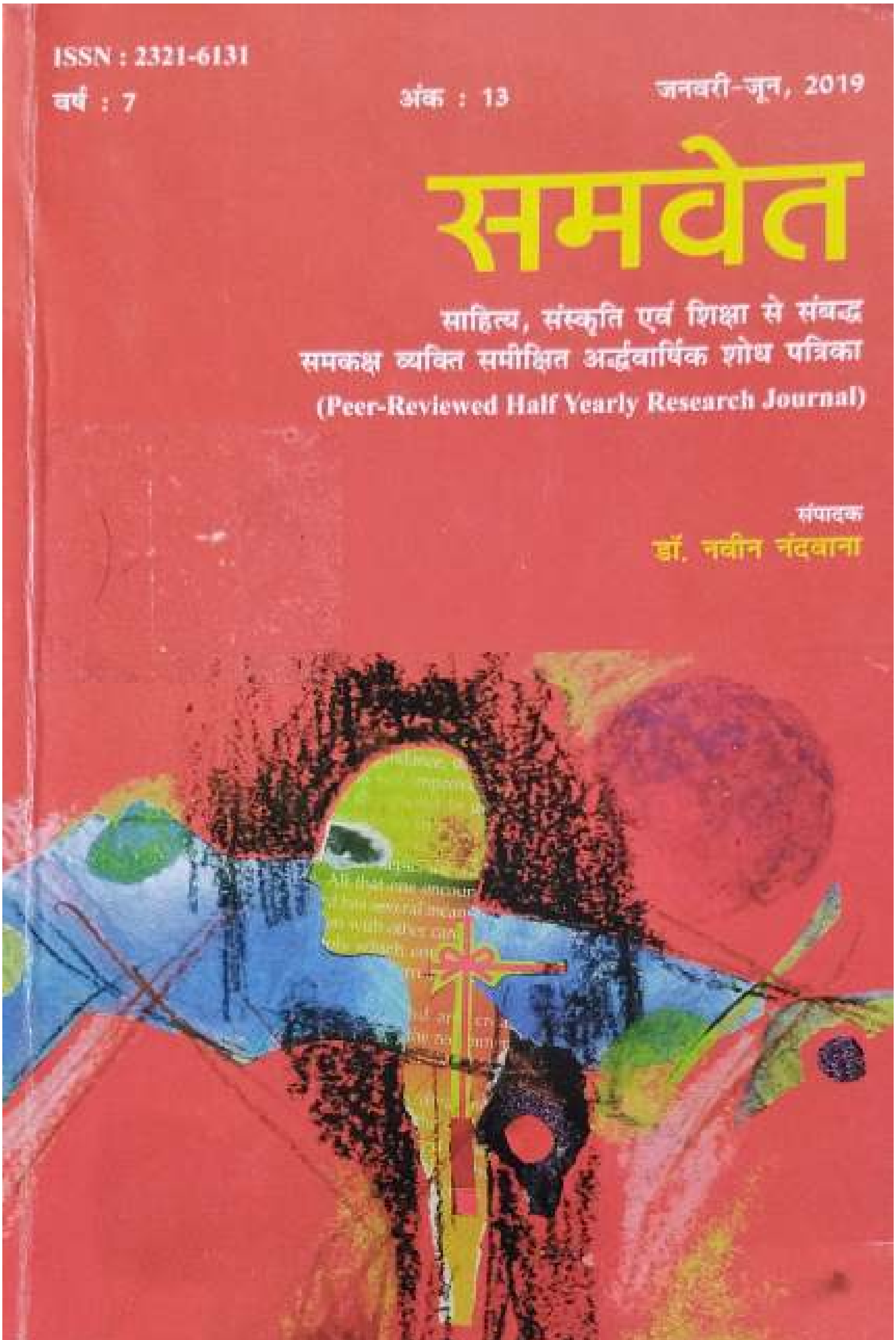
ISSN : 2321-6131
वर्ष : 7
अंक : 13
जनवरी-जून, 2019
समवेत
साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)
संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

समवेत ISSN 2321-6131

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. नवीन नन्दवाना
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

परामर्श एवं सहयोग :

प्रो. के. के. शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, हिंदी भाषा एवं साहित्य,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रो. माधव हाड़ा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

डॉ. सुनील कुलकर्णी
अध्यक्ष, तुलनात्मक भाषा विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

डॉ. अखिलेश शंखधर
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर

मुकेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य

प्रबंध संपादक :

डॉ. सविता नन्दवाना

पत्र-व्यवहार एवं संपर्क :

डॉ. नवीन नन्दवाना
ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर,
भुवाणा, उदयपुर (राज.) - 313001
(मो.) 09828351618, 09462751618
email : editordeskudr@gmail.com

आवरण चित्र :

डॉ. श्रीनिवासन अय्यर
विख्यात चित्रकार, उदयपुर (राज.)

सदस्यता शुल्क :

व्यक्तिगत :	वार्षिक	- 400 रुपये,
	पंचवार्षिक	- 1,500 रुपये
संस्थागत :	वार्षिक	- 500 रुपये,
	पंचवार्षिक	- 2,000 रुपये

इस अंक का मूल्य : 200 रुपये

कृपया सदस्यता राशि नगद/धनादेश/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा **समवेत ध्वनि संस्थान** के नाम भेजें।

बैंक खाता विवरण: ICICI Bank Ltd., MLS University Branch, Udaipur (Raj.)
Account No. : 694 201 701373
IFSC : ICIC0006942

© संपादकाधीन

- संपादन कार्य पूर्णतः अवैतनिक है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु लेखक-संपादक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित आलेखों की मौलिकता के लिए सम्बन्धित लेखक उत्तरदायी हैं।
- समस्त विवादों के लिए न्यायालय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रकाशक :

हिमांशु पब्लिकेशन्स

464, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर 313 002 (राज.), फोन: 0294-2421087
4379/4-B, प्रकाश हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2, मोबाइल: +91-98109-79709
Web : himanshupublications.com; email : himanshupublications@gmail.com

अनुक्रम

1. भारतीय आदिवासी साहित्य के मुद्दे — 1
   डॉ. भीम सिंह

2. हिंदी ग़ज़ल में प्रकृति एवं पर्यावरण — 13
   डॉ. अशोक एम. पवार

3. साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन के उपागम एवं निकष — 18
   डॉ. अमित कुमार भारती

4. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'झूलानट' में नारी मनोविज्ञान — 30
   खुराइजम बेबीरोशिनी

5. स्त्री जीवन और समकालीन समाज — 37
   डॉ. रेखा कुर्रे

6. साम्प्रदायिकता का मनोमस्तिष्क पर प्रभाव : 'मेरी माँ कहाँ' — 46
   प्रेम शंकर मीणा

7. बालश्रमिक : अधिकार एवं नीतियाँ — 51
   डॉ. टीना मीणा

8. अज्ञेय का यात्रा-साहित्य : यायावरी का विरल छंद — 59
   डॉ. संध्या कुमारी सिंह

9. राष्ट्रीय चेतना के अमर उद्घोषक : सूर्यमल्ल मिश्रण — 73
   मनोहर सिंह चारण

10. आधुनिक संवेदना के संदर्भ में मुक्तिबोध — 84
    डॉ. ममता खाण्डल

11. जैनेंद्र कुमार की कहानियों में राष्ट्रीय और क्रांतिकारी भावना — 93
    मनीषा खत्री

12. राजस्थान का इक्कीसवीं सदी का हिंदी महिला कहानी लेखन और स्त्री जीवन — 98
    डॉ. सुरेश सिंह राठौड़

13. अस्मितामूलक विमर्श की रपटीली रपट : ग्लोबल गाँव के देवता — 106
    डॉ. राजकुमार व्यास

14. ईसर-गणगौर : कला और संस्कृति की गाथा 122
जयश्री चुंडावत

15. राजी सेठ की कहानियों में आधुनिकता बोध 131
मीनाक्षी झीबा

16. वाल्मीकि रामायण में हास्यरस 138
डॉ. स्मिता शर्मा

17. देवीमाहात्म्य संबंधित लघुचित्रों में अतिकल्पना के तत्त्व 145
प्रो. मदन सिंह राठौड़ एवं नीहारिका राठौड़

18. अनामिका के काव्य में संवेदना के विविध स्वर 151
राजेश कुमार खन्ना

19. 'स्वातन्त्र्य-गाथा' : भारतीय महापुरुषों के अवदान का पुण्य स्मरण 157
रिपन कुमार

अनामिका के काव्य में संवेदना के विविध स्वर

राजेश कुमार खज्जा*

स्त्री ईश्वर की एक ऐसी अद्‌भुत रचना है जिसके भीतर दया, ममता, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, संवेदना, करुणा, कोमलता आदि गुण भरे पड़े हैं। किंतु पुरुष अपने अत्याचारों और अभ्रद व्यवहार से उसी कोमलांगी को कठोर बनने के लिए विवश करता है। स्त्री माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में सदा ही पुरुष के साथ रहती है। स्त्री का कोई भी रूप हमारे सामने आया हो किंतु पुरुष ने उसे केवल छलने का कार्य ही किया है। कोई भी काल रहा हो स्त्री छल से बच नहीं सकी है। साहित्य का संबंध संवेदना से होता है। इसलिए संवेदनाहीन साहित्य का कोई मूल्य नहीं होता है। साहित्य की बड़ी उपयोगिता या सार्थकता इस बात से मानी जाती है कि यह हमारी संवेदना का विस्तार करता है। संवेदना तो जीव-जंतु में भी होती है।

हिन्दी साहित्य कोश में संवेदना को परिभाषित करते हुए कहा गया है- ''साधारणतः संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। मूलतः वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेंद्रियों का अनुभव है। मनोविज्ञान में इसका यही अर्थ ग्रहण किया जाता है। उसकी संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह-रचना की सर्वप्रथम सचेतन प्रक्रिया है, जिससे हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है।''[1] नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार- ''मन में होने वाले बोध या अनुभव अनुभूत और किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाला दुख सहानुभूति।''[2] संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर के अनुसार- ''संवेदना अर्थात् सम-वेदना के द्योतक हैं।''[3] आधुनिक और उत्तर आधुनिक

---

* शोध छात्र, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात) - 390002

काल में अनेक विमर्श उभर कर सामने आए। इन विमर्शों में प्रमुख रूप से आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, स्त्री चेतना आदि प्रमुख हैं।

आज की स्त्री जागरूक हो चुकी है, शिक्षित हो रही है, स्वावलंबी बन रही है, वह अपने स्व एवं अस्मिता की तलाश में है। वह अनंत की जिजीविषा को उजागर करने का सफल प्रयास किया है- ''आज स्त्री ने स्त्री के व्यक्तित्व को नवीन परिप्रेक्ष्य में उभारने का प्रयास किया है। यही प्रयत्न स्त्री विमर्श की नवीन दृष्टि का प्रोत्साहन होता है, साथ ही स्त्री विमर्श के विकास की नवीन संभावनाओं का एवं भविष्य का भी संकेत कराता है।'' आज की अधिकांश पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ विचारशील होने का दावा करती हुई स्त्री-समाज, स्त्री-स्वातंत्र्य, स्त्री समानता और अधिकारों की लड़ाई लड़ते हुए भी नहीं जानती कि वे अधिकार वस्तुत: क्या हैं, कैसे होने चाहिए, किस रूप में होने चाहिए। स्त्रियों को शिक्षित किए बिना उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ना संभव नहीं, स्त्रियों को जागृत और सचेत बनाने की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

आधुनिक काल की स्त्री लेखिकाओं में अनामिका का एक विशिष्ट स्थान है। अनामिका ने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में सृजन कर अपनी सृजनधर्मिता का बखूबी निर्वहन किया है। स्त्री विमर्श के स्वरूप पर अनामिका ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है कि- ''शुरुआती दौर में यह स्त्री-पुरुष संबंधों, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं तथा समाज के उपेक्षित वर्गों की समस्याओं तक ही सीमित था, मूलत: स्त्री केंद्रित ही था, लेकिन अब इसकी दृष्टि व्यापक हो गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर जितनी भी घटनाएँ घट रही हैं, उन सबकी चिंता भी इसके केंद्र में है। संबंधों में संवेदना का ह्रास और उसके कारण विघटन की जो स्थिति बनी है, इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण हैं और स्त्री विमर्श उसी का निवारण मनोवैज्ञानिक तरीके से चाहता है। हिंसा का बदला हिंसा से नहीं लिया जा सकता। मनुष्य स्वभाव से इतना क्रूर और हिंसक जो हो गया, बचपन में मन में पड़ी किसी कुंठा का ही परिणाम है। स्त्री विमर्श मानव के मन में आशा का संचार करना चाहता है। फिर से मानवीय मूल्यों से संपृक्त करना चाहता है। आशावादिता इसका मूलमंत्र है।''

वास्तव में नारी समाज का आधा हिस्सा और समाज की उन्नति-अवनति का मापदंड है। वह साहित्य, संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। ''वह उच्च मानवीय गुणों और आदर्शों का अजस्र स्रोत है। वह पुरुष की प्रेरणा, साथी, मार्गदर्शक, संरक्षक है। उसके बिना सृष्टि, सभ्यता, संस्कृति और पुरुष के जीवन में वह स्थान नहीं दिया

जाता। जिसकी वह हकदार है। पुरुषप्रधान सनातनी समाज व्यवस्था नारी को सदैव उसके अधिकारों से वंचित रखकर उसे मात्र भोग का साधन बनाती है।'[5] जो वर्तमान सन्दर्भों के उचित मापदंड नहीं हैं। आज भारतवर्ष में नारी को भोगवादी वस्तु के रूप में देखना सामाजिक बदलाव की ओर इंगित करता है। स्त्री-विमर्श में अनामिका उनकी उपलब्धियों के बारे में प्रकाश डालते हुए कहती हैं कि- ''स्त्री-विमर्श की सबसे बड़ी उपलब्धि ही यही है कि अपनी खुदी की चेतना जागी है। हर वर्ग, धर्म जाति के लोगों में एक नई चेतना जाग्रत हुई है। यहाँ तक की सड़क पर रहने वाली स्त्री भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठी है।'[6] घर और परिवार में स्त्री पर अत्याचार होता ही रहता है। अत्याचार के प्रति विद्रोह के स्वर हमें अनामिका की कविताओं में मिलते हैं, जहाँ स्त्री प्रश्न कर रही हैं-

''शायद यह घर मेरा है,
किसका है ये ज़लज़ला?
X X X
ये मालिक क्या होता है?
क्या होता है किसी का होना?
X X X
बहुत प्यार करता है जो मुझको
किसका है?
किसकी हैं तनी हुई भवें
और किसका है
यह मुझ पर लहराता चाबुक है?'[8]

पारिवारिक घुटन और संत्रास से व्यथित मन घर की जड़ चीजों में भी आत्मीयता खोजकर प्रश्न करने लगता है। अनामिका की 'फर्नीचर' कविता स्त्री के इन्हीं सवालों को वाणी देती है, जिसमें फर्नीचर से प्रश्न पूछती है स्त्री-

''मैं उनको रोज झाड़ती हूँ
पर वे ही हैं इस पूरे घर में
जो मुझको कभी नहीं झाड़ते।'[9]

लेकिन मन में व्याप्त भय उनकी पंक्तियों में यूँ व्यक्त होता है-

''जब आदमी ये हो जाएँगे,

मेरा रिश्ता इनसे हो जायेगा क्या

वो ही वाला

जो धूल से झाड़न का?''[10]

जब परिवार में स्त्री का दर्जा दोयम हो, घर और बच्चों की देखभाल तक उसकी जिम्मेदारी सीमित हो, उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व न विकसित हो सकता हो, तब वह परिवार में उपस्थित होकर भी स्वयं को अनुपस्थित समझने लगती है।

'''लोग दूर जा रहे हैं/हर कोई किसी से दूर

लोग दूर जा रहे हैं/और बढ़ रहा है

मेरे आस-पास का स्पेस।''[11]

स्त्री विमर्श पर मंजु रुस्तगी ने कहा है कि- ''स्त्री विमर्श और कुछ नहीं आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकार की पहल का दूसरा नाम है। स्त्री विमर्श वस्तुत: स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद की संकल्पना है। फिर भी बीसवीं शती के अंतिम दो दशक में इस विचारधारा को पनपने का उपयुक्त परिवेश मिला।''[12]

भारतीय समाज में घरेलू हिंसा प्राय: अनाचार के रूप में सार्वभौमिक रूप से विद्यमान है। ''उत्पीड़न, प्रताड़नाओं और अवहेलनाओं के कटीले तारों से बींधता स्त्री-जीवन का यह अध्याय तब तक समाप्त नहीं हो सकता जब तक शोषणकर्ता अपनी संवेदनहीनता को त्याग न दें। इसका सीधा-सा रास्ता ही महिलाओं पर चोट करना है। ऐसा नहीं की सभी पुरुष शोषणकर्ता हैं क्योंकि अगर ऐसा होता तो उच्च पदों पर आसीन महिलाएँ नहीं होती। क्या विश्व का कोई भी पुरुष पूर्ण विश्वास से यह कह सकता है कि स्त्री के ममत्व और स्नेह के बिना अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत किया।''[13] घरेलू हिंसा आज घर-घर की कहानी है। परिवार में खटर-पटर होती ही रहती है। भारतीय समाज को विवाह को एक संस्कार के साथ जोड़ा गया है, इसलिए उसमें विसंगतियाँ भी है। विवाह संबंधों में स्त्री की दयनीय स्थित का वर्णन करते हुए अनामिका लिखती हैं-

''पीठ नीली/चेहरा पीला/लाल आँखें और

जख़्म हरे/कुदरत के सब रंगों की बोतल

उलट-पलट जाती है मुझ पर/उनके आती ही।''[14]

एक अजीब से विरोधाभास में जीती हैं स्त्रियाँ। अनामिका की कविताओं में भारतीय परिवारों में स्त्री के दुखद स्वरूप को उद्घाटित करती हैं-

"घर में घुसते ही/जोर से दहाड़ते थे मालिक और
एक ही डाँट पर/एकदम पट्ट/लेट जाती थीं वे
दम साध कर।"[5]
एक और अन्य कविता में भी इसी प्रकार की स्थिति का वर्णन हुआ है-
"हाँ, तुम्हारा पिन-कुशन हूँ-
हर नुकीली बात तुम मेरे हृदय में घोंपकर
फ़ासलों की फाइलें बढ़ाते हुए।"[6]

स्त्री परिवार के लिए समर्पित रहती है। पत्नी और माँ के बीच वह अपने कर्तव्यों का वहन करते हुए अपनी इच्छाओं का दमन कर देती हैं। अनामिका ने स्त्री की बेचैनी को व्यक्त करते हुए लिखा है-

"एक दिन पुच्छल तारे की बेचैनी में
सिर धुनकर/बृहस्पति से टकराने से पहले
मैंने सोचा-
मेरे पीछे इतने बड़े कुनबे का/आखिर क्या होगा?
यह सोचकर मैंने टक्कर स्थगित की,
और मन बदलने की खातिर
घर की छोटी-मोटी चीजों के बारे में
सोचने लगी।"[7]

अनामिका स्त्री के दुख या अवसाद को भी साझा करने की क्षमता रखती है। समाज में अपनी 'जगह' की खोज और समाज द्वारा परिष्करण की प्रक्रिया-इसी द्वंद्व में स्त्री का अन्तर्जगत से उसका संबंध भी परिभाषित होता है! 'बेजगह' कविता में अनामिका कहती हैं-

"अपनी जगह से गिरकर/कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून।"[8]

स्त्री मन की पीड़ा के साथ-साथ उनके मन में उठने वाले सवालों से भी अनामिका अनजान नहीं है, वह जानती हैं तभी तो कहती हैं-

"सिर पर जितने बाल, उससे कुछ ज्यादा सवाल।"[19]

अनामिका मानती हैं कि स्त्री की शारीरिक संरचना उसे समाज में शोषितों की श्रेणी में खड़ा कर देती है। सामाजिक ताने-बाने में स्त्री की असुरक्षा को अनामिका ने अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए लिखा है-

"बेथलेहम और यरूज़लम के बीच/कठिन सफर में उनके
हो जाते कई बलात्कार।"[20]

अनामिका के काव्य में स्त्री की संवेदना के जो रूप व्यक्त हुआ है उससे ज्ञात होता है कि आज की नारी आधुनिकता के नाम पर भी रूढ़िवादी विचारधारा से घिरी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ

1. धीरेन्द्र वर्मा : सं. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1*, पृष्ठ 863
2. श्रीनवल जी: *नालंदा विशाल शब्द सागर*, पृष्ठ 1385
3. रामचन्द्र वर्मा : सं. *संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर*, पृष्ठ 664
4. डॉ. रामस्वरूप खरे : *सं. शोधार्णव*, अप्रैल-जून 2014, पूर्णांक 32, पृष्ठ 21
5. मंजु रुस्तगी : *अनामिका का काव्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 197
6. डॉ. रामस्वरूप खरे : *सं. शोधार्णव*, अंक अप्रैल-जून 2014, पूर्णांक 32, पृष्ठ 20
7. मंजु रुस्तगी : *अनामिका का काव्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 198
8. अनामिका : 'यक्ष प्रश्न', *खुरदुरी हथेलियाँ*, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ 35
9. अनामिका : 'फर्नीचर', वही, पृष्ठ 19
10. अनामिका : 'फर्नीचर', वही, पृष्ठ 19
11. अनामिका : *तीसरी दुनिया : एक स्त्री का अन्तर्जगत बनाम बहिर्जगत*, कविता में औरत, पृष्ठ 50
12. मंजु रुस्तगी : *अनामिका का काव्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 197
13. डॉ प्रवीण कुमार सक्सेना : सं. *शोधायन भाग 1*, पवनपुत्र पब्लिकेशन, शारदा नगर लखनऊ, 2010, पृष्ठ 70
14. अनामिका : 'टूटी-बिखरी और पिटी हुई', *खुरदुरी हथेलियाँ*, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ 46
15. अनामिका : 'पतिव्रता', *खुरदुरी हथेलियाँ*, वही, पृष्ठ 27
16. अनामिका : 'गृहलक्ष्मी-9', *दूब धान*, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली, पृष्ठ 93
17. अनामिका : 'गृह लक्ष्मी 6', *दूब धान*, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली, पृष्ठ 57
18. अनामिका : 'बेजगह', *खुरदुरी हथेलियाँ*, राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ 15
19. अनामिका : 'आदि प्रश्न', *अनुष्टुप*, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 57
20. अनामिका : 'मरने की फुर्सत', *दूबधान*, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली, पृष्ठ 57

❑❑❑

राष्ट्रीय संगोष्ठी

जनजातीय लोक संस्कृति एवं साहित्य

10-11 अगस्त, 2019

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय
बाँसवाड़ा (राज.)

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा (उ.प्र.)

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि ....राकेश कुमार बजाज.... पद ....शोधार्थी....

संस्था ....महाराजा सयाजीराव वि. वि. बड़ौदा.... ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय-विशेषज्ञ / सत्र अध्यक्ष / प्रतिभागी के रूप में

"वागड़ी लोक साहित्य में सामाजिक चेतना" विषय पर व्याख्यान दिया / शोध पत्र प्रस्तुत किया / सहभागिता की।

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
निदेशक
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

डा. नरेन्द्र पानेरी
आयोजन सचिव
राष्ट्रीय संगोष्ठी

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

राष्ट्रीय संगोष्ठी

घुमन्तू जनजातियाँ : दशा एवं दिशा

16 फरवरी, 2020

प्रमाणित किया जाता है कि राजेश कुमार [illegible] पद शोधार्थी

संस्था महाराजा सयाजीराव वि. वि. बड़ौदा, गुज. ने गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा के तत्त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "घुमन्तू जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन : एक विशेष अध्ययन" विषय पर व्याख्यान किया / शोध पत्र प्रस्तुत किया / सहभागिता की।

16 फरवरी, 2020

(डॉ. अलका रस्तौगी)
आयोजन सचिव

हिन्दी विभाग, भाषा-साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
एवं
हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर का संयुक्त उपक्रम
राष्ट्रीय संगोष्ठी
दिनांक : 10 जनवरी, 2020
"काव्यार्थ विवेचन की भारतीय परंपरा : सामर्थ्य एवं प्रासंगिकता"
प्रमाणपत्र
श्री राजेश कुमार कन्ना
रीतिकालीन काव्यशास्त्र का स्वरूप